श्रीगोरखनाथ मन्दिर में 'श्रीराम कथा'

गोरखपुर, 25 सितम्बर। श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज की 49वीं एवं राष्ट्र सन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की चतुर्थ पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत श्रीगोरखनाथ मन्दिर में चल रही **'श्रीराम कथा'** के चौथे दिन भगवान श्रीराम का मिथिला नगरी में प्रवेश एवं जगद्नन्दनी जगद्जननी मॉ सीता के साथ उनके भेंट के साथ कथा प्रारम्भ हुई। कथाव्यास काशी से पधारे **जगदगुरू अनन्तानन्द द्वाराचार्य स्वामी डॉ0 रामकमल दास वेदान्ती जी महाराज** जी महाराज श्रीराम कथा को विस्तार देते हुये कहा कि भगवान श्रीराम महाराजा जनक के धनुषयज्ञ में पहुॅचकर शिवधनुष तोड़ते है तथा क्रोध के दूसरे प्रतीक भगवान परशुराम का क्रोध शान्त कर उन्हें मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं। धनुषयज्ञ एवं श्रीराम विवाह पर केन्द्रित हो गई। युवा रूप में भगवान श्रीराम महाराजा जनक के धनुष यज्ञ की सूचना पाकर गुरू विश्वामित्र के साथ जनकपुर की ओर चल पड़ते है, ऋषि पत्नी जड़वत अहिल्या का उद्वार करते हैं। अहिल्या मुक्त होकर पतिधाम चली गई। भगवान ने वशिष्ठ–विश्वामित्र को मिलाया, क्योकि धर्म जोड़ता है, एक दूसरे को मिलाने का कार्य करता है, धर्म के समक्ष कोई भेद नही। भगवान श्रीराम, अनुज लक्ष्मण विश्वामित्र जी के साथ जनकपुर पहुॅचते हैं। दोनो राजकुमारों के जनकपुर पहुॅचने की सूचना नगर में फैल गई। दोनो राजकुमारो की सुन्दरता की चर्चा घर–घर में व्याप्त हो गई। नर–नारी मन ही मन में भगवान से प्रार्थना करने लगे कि जनकसुता सीता का विवाह सॉवले–सलोने श्रीराम से ही हो। मॉ सीता की कई सखियॉ यह सोचकर व्याकुल हो रही थी कि इतने सुकोमल राजकुमार से शिव का धनुष कैसे टूटेगा? गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि एक सखी जो श्रीराम की महिमा सुन चुकी थी उसने कहा कि जिनके चरण स्पर्श मात्र से अहिल्या को मुक्ति मिल गई उन्हें साधारण मनुष्य नही समझना चाहिए।

कथा व्यास ने कथा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि यह कलि काल मलायतन है। शरीर और मन के मैलों से लिप्त मनुष्य के लिये हरि नाम के अलावा कोई दूसरा आधार नहीं है। भगवान शिव ने अपने मन में प्रभु राम के जिस चरित्र को गूढ़ रूप में रखा था उसे पार्वती जी के प्रेम को देख कर उन्होंने उसे सुनाया। शिव और उमा के संवाद रूप में उपस्थित यह राम कथा सभी संदेहों को मिटाने वाली और जन्म–मरण के बंधन से मुक्ति दिलाने वाला है। योग, यज्ञ, जप, तप ,व्रत और पूजा कोई भी साधन इस राम कथा के श्रवण और मनन से अधिक उपयोगी नहीं है राम नाम जप कर के गणिका, अजामी, व्याधि जैसे पतित जीव भी तर गये आभीर, यवन , किरात, खस और चण्डाल आदि जिन्हें पाप योनि का बताया गया है वे भी शुद्ध और पवित्र हो गयें। ऐसी लोक पावन राम कथा का जो लोग श्रवण करते हैं वे सारे मनोमल को धोकर अन्त में श्रीराम के धाम को प्राप्त करते हैं। जीवन काल में कृपा निधान श्री राम अपने भक्तों की अविद्या जनित सारी विकृतियों को दूर करते हैं।

ज्ञान और भक्ति प्रदान करने वाली इस पावन राम कथा को जो भी मनुष्य सुनते हैं वे इस संसार रूपी प्रचण्ड सूर्य की संतप्त करने वाली किरणों से कभी प्रभावित नहीं होते है क्योंकि यह माया, मोह आदि मलों को हर कर प्रेम के अद्भुत प्रवाह से शरीर, मन और आत्मा को शीतल कर देती हैं। श्री राम और सीता जी के विवाह के मांगलिक प्रसंग की कथा आगे बढ़ी। श्रीराम कथा से अपने मन को पवित्र करने के साथ ही हमें इन घर–परिवार और समाज

की भी चिन्ता करनी चाहिये। यदि की राम की पूजा कर उनकी कथा सुन कर भी हमने रामचरित का अनुसरण नहीं किया, उन्हीं की तरह आगे बढ़कर समाज के उपेक्षित, वंचित दीनों और दलितों का उद्धार नहीं किया, सारे संसार को सियाराममय देख कर उसकी सेवा नहीं की तो कथा सुनने और कहने का क्या लाभ है ?

धनुषयज्ञ में रावण और श्रीराम के भेंट को एक नये ढंग से प्रस्तुत करते हुए कथावाचक कहते है की रावण को पता था कि उसे तारणें वाला ब्रह्म अवतरित हो चुका है और वह श्रीराम को देखते ही यह समझ गया कि श्रीराम ही उसके तारणहार है। कथाव्यास कहते है कि रावण ने श्रीराम से कहा कि मैं भविष्यदृटा हूॅ और मैं यह देख रहा हूॅ कि यहॉ के बाद आप तीनों का वनवास होगा और हमारे श्रीलंका का सर्वनाश होगा। हे राम! मैं आपकी प्रतिक्षा करूंगा।

श्रीराम–रावण संवाद के माध्यम से राष्ट्र और राष्ट्रीयता को कथाव्यास स्वर देते है। आपसी मतभेदों के स्थान पर समरस भाव का संदेश देते है। देश और समाज के लिए सबकुछ त्यागकर एक होकर कार्य करने का आह्वान करते हुए कथाव्यास कहते है कि राष्ट्र धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं। भगवान श्रीराम ने राष्ट्रधर्म का ही संदेश देने के लिए उत्तर से दक्षिण तक लोगों को एक कर आसुरी शक्तियों का विनाश तथा राष्ट्रीय एकता का मंत्र फूंका।

श्रीराम और सीता के विवाह की तैयारी में सारी मिथिला नगरी को सजाया गया। जनकपुरी से विवाह की सूचना एवं निमंत्रण लेकर दूत अयोध्या पुरी भी भेजे गयें। शुभ समाचार पाकर हर्ष और प्रसन्नता से विभोर महाराज दशरथ अपने पुत्रों सहित बारात सजागर जनकपुरी पहॅुचे। बारात के आगमन की बात सुन कर महाराज जनक भी हाथी, घोड़ा और ध्वज आदि सजा कर बारात की अगुवानी के लिये आगे बढें। भेंट के लिये लाई गयी सारी सामग्री महाराज दशरथ को निवेदन कर याचकों को भरपूर दान, दक्षिणा देकर वे उसे जनवासे भी ले आयें। राम और सीता के शुभ विवाह का समाचार पाकर शिव–ब्रह्मा भी सभी देवतागण अपने–अपने विमानो पर चढ़कर वह विवाह देखने को आये जिस प्रकार सजावट जनकपुरी में दिखाई पड़ी वह सब बड़ा अद्भुत और अलौकिक था। सारा नगर, वहां के सभी नर–नारी अत्यन्त रूपवान, सुघर, धर्मशील और सुजान थें। ब्रह्मा को भी बड़ा आश्चर्य हुआ उन्हें भी लगा कि यह हमसे विलक्षण रचना है तब भगवान शिव ने समझाया कि इसमें आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है जिनका नाम लेने मात्र से सारे अमंगल नष्ट हो जाते हैं, चारों पदार्थ करतल–गत हो जाते हैं यह राम और सीता भी जगत्पिता और जगत्जननी हैं। इसलिये उनके विवाह के अवसर पर यह लोकोत्तर विलक्षणता तो स्वाभाविक है। विवाह के इस अवसर पर आकाश से धरती तक कोलाहल ही कोलाहल सुनाई पड़ रहा था कोई किसी की बात नहीं सुन रहा था।

इसी बीच श्रीराम विवाह मण्डप में पधारें उस समय ब्रह्मा आदि देवगण भी ब्राह्मणों का वेश धारण कर यह कौतुक देखने के लिये उपस्थित रहें। इसी बीच श्रीराम विवाह मण्डप में पधारें उस समय ब्रह्मा आदि देवगण भी ब्राह्मणों का वेश धारण कर यह कौतुक देखने के लिये उपस्थित रहें। विधिवत् विवाह मण्डप में श्रीराम और सीता जी का विवाह हुआ। श्रीराम और सीता के विवाह के पश्चात् श्री जनक जी ने महाराज दशरथ जी के गुरू महामुनि वशिष्ठ की आज्ञा लेकर राजकुमार माण्डवी, श्रुतिकीर्ति और उर्मिला को भी विवाह मण्डप में बुलवाया और उनका विवाह श्री भरत से जी माण्डवी का विवाह, उर्मिला से लक्ष्मण जी का विवाह और

श्रुति कीर्ति से शत्रुघ्न जी का विवाह भी विधिवत सम्पन्न करवाया। महाराजा दशरथ ने महामुनि विश्वामित्र जी के चरणों में प्रणाम कर कहा कि हे महामुनि! यह सब कुछ आपकी कृपा से ही सम्भव हो सका। यथायोग्य सम्मान प्राप्त कर बारात अयोध्या के लिये बिदा हुई। उपहार में महाराज जनक ने जितना कुछ साजो–समान और रत्नाभूषण आदि दिया उसे देख कर कुबेर भी लज्जित हो गयें। इस प्रकार भगवान श्रीराम और उनके भाईयों का विवाह मंगल सम्पन्न हुआ और वे जनकपुरी से वापस अयोध्या धाम में पधारे। गोसाई जी ने कहा है जब भगवान श्रीराम और जानकी के इस विवाह मंगल को आदर सहित सुनते और गातें हैं वे भगवान राम और माता सीता के प्रसाद से सब प्रकार की सुख–सम्पदा पाते हैं। आज कथा इसी पर विश्राम लेती है।

मुख्य यजमानगण विकास जालान, महेश पोद्दार, संतोष अग्रवाल, अवधेश सिंह, अजय सिंह, श्रीचन्द्र बंसल, जवाहरलाल कसौधन आदि थे। मंच का संचालन डॉ0 श्रीभगवान सिंह ने किया।

कथा के अमृत मंत्र

1. भगवान भक्त के अधीन होते हैं।
2. भगवान के दरबार में कोई अछूत नहीं है। जो उन्हें भजता है वही उनका है।
3. सत्कर्म ही हमारे साथ जाएगा।
4. दान जीवन की संचित वह निधि है जो लोक–परलोक दोनों में फलित होती है।
5. श्रद्धा युक्त कर्म ही फलित होता है।
6. पितृपक्ष में पितरों की श्रद्धापूर्वक जलदान–पिण्डदान अवश्य करें।
7. असहायों का सम्बल बनों, मुक्ति का मार्ग मिल जाएगा।
8. भगवान का भजन कभी निरर्थक नहीं जाता।
9. सतियों के सतीत्त्व पर यह धरा टिकी रहती है।